REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

देश विभाजन और सहज मानवीय चरित्र

प्रा.डॉ. जाधव युवराज इंद्रजित
आदर्श कॉलेज, उमरगा , ता. उमरगा जि. उस्मानाबाद

भारत में सांप्रदायिकता का इतिहास बहुत पूराना है। हिन्दू मानते है हम यहाँ के मूल निवासी है मुस्लिम तो विदेशी है। भारत हिन्दू राष्ट्र है। हमारी संस्कृति तीज त्यौहार सबसे श्रेष्ठ है।। मुस्लिम मानते थे की हमारा जन्म ही हूकुमत करने के लिए हुआ है। भारत पर आक्रमणकारियों का ताँता-सा लगा रहा पहले मुगल आये, उसके बाद मुस्लिम शासक और उसके बाद अंग्रेज आये। अग्रेंजो ने रही-सही कसर भी पुरी कर दी। बाहरी आक्रमण और अंतर्गत कलह ने देश को खोखला बना दिया था।

सदियों से हिन्दू और मुस्लिम आपस में सघंर्ष कर रहे है। धर्म के नाम पर खून की नदियाँ बहाने के लिए तैयार है। उसे मुस्लिम लीग, सिख शक्तियाँ, हिन्दू-महासभा, राष्ट्रीय सेवक संघ के विचारों से संजीवनी मिल गयी थी। भारत में सांप्रदायिकता अंग्रेजो के आने से पूर्व ही थी। अग्रेंजों के 'फुट डालो और राज करो' नीति ने हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष को बढावा दिया।अग्रेंजो ने हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष खत्म करने के बजाय वह तटस्थ रही इस के कारण धार्मिक संघर्ष को खुला मैदान मिल गया। अग्रेंज यही तो सोच रहे थे की हिन्दू-मुस्लिम आपस में लडते रहें तो हम और कई सालों तक यहा शासन कर सकते है।

उस समय देश को आजाद करने के लिए दो विचारधाराऐं प्रवाहीत थी। अहिंसा के द्वारा महात्मा गांधीजी देश को आजाद कराना चाहते थे। गांधीजी पहले आजादी प्राप्त करना चाहते थे बाद में अंतर्गत कलह मिटाना चाहते थे। गांधीजी को ना हिन्दू समझ सके ना मुस्लिम। तिलक जैसे जहालवादी खून की नदियाँ बहाकर देश को आजाद करना चाहते थे। उस समय सत्ता अग्रेंजो के हाथो में थी। वे तठस्थ रहे। उनकी साजीश ने हिन्दू मुस्लिम को एकसुत्र में कभी बँधने नही दिया। सिख बोले सो निहाल! सत् सिरी अकाल!' के नारे लगा रहे थे। मुस्लिम लीगी 'ले के रहेंगे पाकिस्तान' का नारा दे रहे थे। जिन्ना के लीगी प्रवेश से लीग के जान में जान आ जाती है। उन्होने अपने अनुयायियो द्वारा करो या मरो, ईस्लाम खतरे में है यह अफवाहे फैलायी। मुस्लिम १९३८ से ही पाकिस्तान की माँग कर रहे थे। लॉर्ड माऊंट बेन्टन ने जैसे ही देश विभाजन का ऐलान किया १६, १७, १८, १९ आगस्त १९४६ में भारत में हिन्दू-मुस्लिमों मे भीषण ताड़ंव आरंभ हुए। नरसंहार हुए। स्त्रीयों पर अत्याचार हो रहे थे। खून, लुटमार खुले आम की जा रही थी। गोरक्षा अभियान, हिन्दी-उर्दू विवाद, शुद्धि आंदोलन, काँग्रेस का लीग के साथ धोखा इन घटनावों ने हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष को बढ़ा दिया। संयुक्त चुनाव में काँग्रेस और लीग में जो वादा हुआ था वह काँग्रेस ने पुरा नही किया। इस से नाराज होकर जिन्ना ने ईस्लाम खतरे में है यह अफवाहे फैलायी और मुस्लिमों को करो या मरो यह मंत्र दे दिया। देश विभाजन का ऐलान होते ही लाखों के संख्या मे हिन्दू-मुस्लिम मारे गयें। हिन्दूओं से भरी रेलगाडियाँ पल में राख में बदल जाती थी और कराची जानेवाली रेल रास्ते में ही जलायी जाती थी। उस समय संसार भर के पशु पंछी इन लाशों कों नोच-नोच खा रहे थे चारों तरफ गंदगी फैल गयी थी। सिख स्त्रीयाँ कुऐं मे कुदकर खुदकुशीयाँ कर रही थी। देश विभाजन के समय १०३ गाँव जलकर राख में बदल गये थे। ऐसे स्थिति में भी कुछ ऐसे मानवीय चरित्र थे जो मूस्लिम होकर भी हिन्दूओं को अपने घर में पनाह दे रहे थे और कुछ हिन्दू चरित्र ऐसे थे जो मूस्लिमों को अपने घर में रखकर उसकी रक्षा कर रहे थे। ऐसे चरित्र भले ही संख्या में कम थे लेकिन ऐसे जहरीले वातावरण में वे जुगनू की तरह चमक रहे थे। वे मनुष्य को सिर्फ मनुष्य के रुप में देखकर आचरण कर रहे थे। यशपाल के 'झूठा सच' उपान्यास का कालीचरण पडोसी मुस्लिमों को देश छोड़कर जाते समय रोकता हुआ कहता है "चाहे हिन्दूस्तान हो या पाकिस्तान, हम तो पड़ोसी है, शुरु से एक साथ रहे है और अब भी रहेंगे।"[२] डॉ. रलालाल बस्ती का कथन "मुझे हिन्दुस्तान-पाकिस्तान से क्या लेना-देना सेवा करना मेरा धर्म है।" यह मानवीयता को दर्शाता है।

'तमस' उपन्यास में चित्रित जामा मस्जिद के सीढ़ियों रखे गये सुअर वाली घटना ने तो देश में स्थीति भयावह हुयी और सांप्रदायिक दंगे आरंभ हो जाते है। एहसान अली की पत्नी राजों अपने घर में सिख दापंत्य को पनाह देती है पति और

लड़के से उन दापंत्य कों छुपाकर रखती है। रात के समय उन सिख दापंत्य को दूर पहाड़ी तक छोडने जाती है। राजों के पति और लड़के रमजान ने उसी सिख के घर को लुटकर कंगन लाये थे और उस के बाद घर कों आग लगा दी थी। राजों उन दांपत्य कों सोने के कंगन लौटा देते हुए कहती है "मैं क्या जाणा भैण अपना-अपना नसीबा! चहवी पासे आग लगी है।"[३] आगे तुम्हारा नसीब। इस प्रकार राजों मुस्लिम हो कर भी सिख दांपत्य कों घर में पनाह देती है। एक तरफ मुस्लिम-हिन्दूओं का खूले आम कत्ल कर रहे थे तो दूसरी तरफ शाहनबाज नामक मुस्लिम युवक हिन्दू दोस्त रघुनाथ और उसके परिवार को अपने एक दुसरे घर में पनाह देता है। हिन्दुओं को बचानें मे जूट जाता है, इतना ही नही उल्टे मुस्लिमों को ही धमकाते हुए कहता है "इस मेरे यार पर तो मेरी जान भी कुर्बान है इसे कोई हाथ लगाकर तो देखे उसकी चमड़ी उधेड़ दूँ।" सोहनसिंह हिन्दू-मुस्लिम और सिख में एकता चाहता है। वह सभी धर्मो को समझाना चाहता है की हम झूठी अफवाहें सून-सूनकर एक-दूसरे के खिलाफ तैश में आ रहे है।

कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' 'उपन्यास में अदीब, सलमा, बुटासिंह ऐसे मानवीय चरित्र है। सलमा अदीब से प्रेम करती है। वह मानती है 'ईस्लाम की नजर से पाकिस्तान का बनना ही गलत है।'[४] उसने अपने प्रेम में धर्म को कभी आड़े आने नही दिया। बूटासिंह मुस्लिम लड़की जेनीब की रक्षा कर उससे विवाह करता है वह कहता हैं "हिन्दू-मुसलमान के नाम पर औरत की इज्जत का बँटवारा नही हो सकता।"[५] वह विभाजन के बाद जेनीब को पाने के लिए धर्म परिवर्तन करके पाकिस्तान तक जाता है।

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास की नसीबन विधवा मुस्लिम स्त्री पात्र है। वह हिन्दू बचन के बच्चों को अपने घर में रख लेती है। वह बचन के लडकों का लालन-पालन करती है। सुत कात कर पैसे कमाती है और अनाथ हिन्दू लड़कों की परवरीश करती है। तब आर.एस.एस. के लोंग लांछन लगाते है की तुम मुस्लिम आबादी बढ़ाना चाहतें हों। हम बच्चों को अनाथालय में रखेंगे तब वह कहती है 'हम यह झंझट नही जानते---- रही उनकी मुसलमान होने की बात सो सोलह आने गलत है।' उनके लिए बच्चे-बच्चे थे। हिन्दू-मुस्लिम कुछ नही थे। उसे अनाथ बच्च्यों का बिलखना नही देखा गया इसलिए अपने घर ले आयी थी।

मुख्तार साहब को हिन्दू-मुस्लिम तनाव पंसद नही था। वे धर्मनिरपेक्ष थे। वे हमेशा कहते है "भले भलाई इसी में है कि हिन्दू-मुसलमान मिलकर रहे।"[६] इसलिए वे आपस में सोहार्द बनाकर रखने की बिननी करते है।

राही मासूम रजा ने भी अपने ऑधा गाँव, टोपी शुक्ला, ओस की बूँद, असंतोष के दिन उपन्यासों में ऐसे ही मानवीय चरित्रों को उभारा है। मुस्लिम पात्र फुन्ननमियाँ कहता है चंद मुस्लिमों के कारण सभी मुस्लिमों पर शक करना ईमानदार जनता के प्रति अन्याय होता है। मेरा जन्म गंगौली में हुआ है। मै पला बडा गंगौली में। मुझे इस गाँव से मुहब्बत है। मैं भला पाकिस्तान क्यो जाऊँ? आजादी के आंदोलन में उनका लडका मुमताज मारा गया तो वह समझता है कि उनका लड़का देश के काम आ गया। लीगी अनुयायी तरह-तरह के पैंतरे बदलकर मुस्लिमों को भड़का रहे थे। मुस्लिमों की किमत दाल में नमक की तरह है। हिन्दू शासन व्यवस्था आ जायेगी तो मुस्लिमों को कोई पुछेगा ही नही। हमारे स्त्रीयों पर अत्याचार होंगे लेकिन यह किसी ने नही पुछा की कौन से हिन्दू राजाने किस मुस्लिम स्त्री पर कब अत्याचार किया है।

कम्मो का कथन "ए साहब जब मुसलमान लोग पाकिस्तान चले जैयहे, तो फिर मास्जिद में घोड़ा बँधे चाहे गाय का फरक पडि है।"[७] जिन्ना के अनुयायियों पर किया हुआ एक करारा तमाचा है। कम्मो को भरोसा था ऐसा कुछ भी हिन्दू शासन में हुआ है न होगा।

टोपी शुक्ला उपन्यास में चित्रित टोपी यह हिन्दू चरित्र है। इफ्फन मुस्लिम चरित्र है। इन दोनो के दोस्ती में धर्म कभी आड़े नही आया।

महेश हिन्दू होकर भी सांप्रदायिक दंगे के समय मुस्लिमों की मदद करता है। सकीना के पिता को अपने घर में रखने के लिए प्रयत्न करता है। महेश हिन्दू होकर मुस्लिमों की मदद करने के कारण हिन्दू चीढ़ जाते हैं। वह सकीना के पिता को उनके घर छोड कर आते समय हिन्दू द्वारा ही मारा जाता है। सकीना महेश का भाई रमेश को राखी बांधना चाहती है लेकिन उसे डर है जिसे भी वह राखी बांधती है वह मर जाता है। उसने बहुत किमती राखी खरीदकर बख्से में रखी थी। तब भी उसे एक पत्र मिला जिसमें लिखा था मेजर रमेश जंग में मारा गया है। तब से राखी उसके मन में साँप बनकर रेंग रही है। वह मुस्लिम होकर हिन्दू रमेश को राखी बाँधना चाह रही थी। उसके मन में हिन्दू-मुस्लिम ऐसा कुछ भेद नही था। टोपी को भी वह अपना भाई समझती है।

'ओस की बूँद' उपन्यास का रामअवतार चरित्र सचमुच रामअवतार था। 'रामअवतार को हिन्दू शिवमन्दिर में मुस्लिमों को लज्जित करने के लिए ही जोर-जोर सें शंखनाद करने के लिए कहते है लेकिन रामअवतार हिन्दू-मुस्लिमों में सघंर्ष न बढ़े इसलिए रात के समय शंख को ही कूएँ में फेंक देता है। "रामअवतार ने शंख कुएँ में फेंक दिया।"[८]

शहला मुस्लिम होकर भी पाकिस्तान विरोधी थी। दीवार पर टँगी जिन्ना के तस्वीर को देखकर हमेशा यही सोचती इसी ने मानवता पर कलंक लगाया है। 'यही मनुष्यता पर दाग लगानेवाला नेतृत्व है? क्या यह चाँद का दाग है जो कभी मिट नही सकता।' जिन्ना को देश विभाजन का जिम्मेदार मानती है। जिन्ना की अधुरी ख्वाईश पुरी करने के लिए उन्होने मुस्लिमों के लिए एक अलग हिस्से की मांग की थी और देश विभाजन करके ही उन्होने अपनी इच्छा पुरी की।

'असंतोष के दिन' उपन्यास के अब्बास अपनी लड़की का विवाह रवि नामक हिन्दू लड़के से करने के लिए तैयार थे। वे अपने लडकी का प्रस्ताव लेकर हिन्दू महरोत्रा घर जाता है तब धर्मनिरपेक्ष समझने वाला महरोत्रा अब्बास को मुस्लिम होने के कारण अलग प्याली में चाय पीने के लिए देता है। महरोत्रा जैसे धर्मनिरपेक्ष समझनेवाले और अंतर्मन्श समुदाय के ही अंग बननेवाले अधिकांश लोग तब से देश में दिखाई देते है। अब्बास भाषा के आधार पर प्रांत रचना से असहमत थे। धर्माधिकारी नामक चरित्र हमेशा इसलिए सोचता रहता है की मनुष्य की पहचान इन्सानियत के आधार पर कब होगी? हमारे देश के लोग कलम से ज्यादा शस्त्रों कीं हिफाजत अधिक कर रहे है यह कब तक चलेगा?

इस प्रकार देश विभाजन के समय भी कुछ ऐसे मानवीय चरित्र थे जो हिन्दू-मुस्लिम एकता के हिमायती थे। वे आपस में लड़ना नही चाहिए इस विचारधारा से चल रहे थे। वे मनुष्य को केवल मनुष्य के रुप में देख रहे थे। उनको धार्मिक संघर्ष कतई पसंद नही था।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार देश विभाजन के समय सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे थे। खून खराबा, आगजनी अत्याचार, लूटमार खुले आम की जा रही थी। उस समय कम संख्या में क्यों न हो ऐसे मानवीय चरित्र थे जो हिन्दू-मुस्लिम में एकता बनाकर रखना चाहते थे। एक-दूसरे की मदद कर रहे थे, रक्षा कर रहे थे। दो धर्मों में सोहार्द बनाये रखने की कोशिश कर रहे थे!

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

मूल ग्रंथ
१. तमस पृ. ३१
२. झूठा सच पृ. ७४
३. तमस पृ. २०३
४. तमस पृ. १३०
५. कितने पाकिस्तान पृ. ११० पृ. ३८
६. लौटे हुए मुसाफिर पृ. ११८
७. आधा गाँव पृ. २४०
८. ओस की बूँद पृ. ५०